AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में व्यंग्य –पौराणिक गाथाएं

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. राजेश शर्मा
प्राचार्य
जेएलएन महाविद्यालय
नवागढ़
जांजगीर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

ऐसा नहीं कि भारतीय परिवेश में बल्कि सारी दुनिया में व्यंग्य की प्रकृति सुधारात्मक ही नहीं बल्कि आक्रामक प्रहार की भी होती है। व्यंग्य की स्थिति एक अच्छे चिकित्सक व शिक्षक की होती है जिनका उद्देश्य अंततः बुरे से नहीं बुराई से घृणा करना सिखाता है। साहित्यकार डॉ. प्रभाकर माचवे मानते हैं कि व्यंग्य बौद्धिक विकास नहीं वरन स्वस्थ जीवन जीने के लिए पौष्टिक आहार का कार्य करता है। हमारे समाज में व्यंग्य साहित्य के साथ लोक साहित्य में भी समाहित है। लोकगाथा, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की प्रमुख विधा है। पाश्चात्य देशों में लोकगाथा 'बैलेड' के नाम से जानी जाती है। अलग–अलग देशों में इसके अर्थ भी अलग–अलग हैं। छत्तीसगढ़ की विभिन्न संस्कृतियों में लोकगाथाओं की भरमार है। यहां की जीवनशैली में पौराणिक गाथाओं का प्रभाव प्रमुखता से दिखाई पड़ता है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथा'' श्रवण की गाथा और 'राजा वीरसिंह', में व्यंग्य का सुंदर निरूपण है।

मुख्य शब्द

व्यंग्य, अधारोष्ठ, वक्रोक्ति, व्यंजना, अनुश्रुतियों, समीचीन.

अध्ययन विषय

प्रस्तुत शोध–पत्र में व्यंग्य विधा व उसके प्रभाव के विषय में बताने का प्रयास किया है। इसके साथ ही पौराणिक छत्तीसगढ़ी लोकगाथा 'श्रवण की गाथा' और 'राजा वीरसिंह' को केन्द्र में रखकर उसमें व्यंग्य के प्रभाव को उल्लेखित किया गया है।

शोध प्रविधि

शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक शोध सामग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। इसके साथ–साथ विद्वानों का भी मार्गदर्शन लिया गया है।

उद्देश्य

पौराणिक लोकगाथाओं के माध्यम से लोक शैली में व्यंग्य की मारक क्षमता को सामने लाना।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का विचार है कि "व्यंग्य वह है जहां कहने वाला अधारोष्ठ में हंस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहास्यास्पद बना लेना हो जाता है।"[1]

व्यंग्य की प्रकृति मात्र सुधार की ही नहीं बल्कि कभी लाजवाब और आक्रामक प्रहार भी करता है। व्यंग्य की स्थिति एक ऐसे सिविल सर्जन की तरह है, जो शरीर के घावों को रोगी के चीखने–चिल्लाने की परवाह किए बिना ऑपरेशन कर डालता है। जिसका उद्देश्य अंततः बुरे से नहीं बुराई से घृणा करना सिखाता है, साथ ही बुराइयों का समूल नाष करने के लिए तत्पर होता है। इस रूप में व्यंग्य का क्षेत्र और कार्य एक अस्त्र के समान सिद्ध होता है।

डॉ. प्रभाकर माचवे के अनुसार के अनुसार ''मेरे लिए व्यंग्य कोई पोज या लटका या बौद्धिक व्यायाम नहीं, पर एक आवश्यक अस्त्र है। सफाई करने के लिए किसी को तो हाथ गंदे करने ही होंगे, किसी न किसी को तो बुराई अपने सिर लेनी ही होगी।''[2]

डॉ. माचवे का मानना है कि व्यंग्य उनके लिए कोई बौद्धिक विकास नहीं वरन् स्वस्थ जीवन जीने के लिए पौष्टिक आहार है।

संस्कृत साहित्य में व्यंग्य शब्द विषिष्ट अर्थ व्यंजना के लिए प्रयुक्त होता रहा है। आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति को हास्य के अंतर्गत नहीं मानते थे। उनकी वक्रोक्ति स्वयं में पूर्ण और काव्य के लिए आवश्यक अंग थी।

व्यंग्य न केवल षिष्ट साहित्य में निहित है बल्कि यह लोक साहित्य में भी समाहित है। लोकगाथा, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य की प्रमुख विधा है। यह वास्तव में है तो लम्बी कहानी जिसका संबंध इतिहास से अधिक है पर गेय है। संस्कृत के अमरकोश के अनुसार – ''गाथा शब्द का अर्थ है पितरगण, परलोक और ऐसे ही अन्यान्य विषयों से संबद्ध अनुश्रुतियों पर आधारित पद्य या गीत।''[3]

अंग्रेजी में गाथा शब्द के लिए 'बैलेड' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'बैलेड' शब्द की उत्पत्ति मूलतः लेटिन भाषा के 'बेलोर' शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है– 'नृत्य करना'।[4]

पाश्चात्य देशों में लोकगाथा 'बैलेड' के नाम से जानी जाती है। अलग–अलग देशों में इसके अर्थ भी अलग–अलग हैं। फ्रांस में 'चासास पापुलेरी', जर्मनी में 'व्होक स्लाइडर', डेनमार्क में 'फोकेवाइजर', स्पेन में 'रोमेने केरी', रूस में 'विलीना', स्पेनिश में 'रोमांश', डेनिस में 'वाइज' आदि। प्राफेसर जी .एल. क्रोटीज के अनुसार– ''बैलेड वह गीत है जो कोई कथा कहता है अथवा दूसरी दृष्टि से विचार करने पर 'बैलेड' वह कथा है जो गीतों में कही गई हो।''[5]

अमेरिकन विद्वान मैक एडवर्ड लीच 'बैलड' को परिभाषित करते हुए उसे प्रबंधात्मक या आख्यानात्मक लोकगीत का एक प्रकार निर्दिष्ट करते हैं।[6]

डॉ. विनय कुमार पाठक लोकगाथाओं में प्रबंधात्मकता निखारते हुए लिखते हैं– ''इन लोकगाथाओं में छंदों की शिथिलता विद्यमान है और विषय प्रतिपादिन के प्रति भी ध्यान कम है फिर भी ये लोक कथाएं प्रबंध गीतों की महिमा से मंडित हैं। इन्हें लोकगाथा ही समझकर विवेचना करना समीचीन नहीं जान पड़ता।''[7]

छत्तीसगढ़ की विभिन्न संस्कृतियों में लोकगाथाओं की भरमार है। यहां की जीवनशैली में पौराणिक गाथाओं का प्रभाव प्रमुखता से दिखाई पड़ता है।

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा ''श्रवण की गाथा'' भी व्यंग्य से अछूती नहीं है। श्रवण कुमार अपने माता–पिता को कांवर में बिठाकर तीर्थाटन के लिए जाते हैं। रास्ते में माता–पिता को प्यास लगती है। श्रवण कुमार माता–पिता के लिए पानी लेने जाते हैं। श्रवण कुमार जिस समय नदी से पानी भरते हैं, उस समय घड़े से निकली आवाज का राजा दशरथ, जो शिकार करने के लिए जंगल में विचरण कर रहे थे ने किसी जानवर की आवाज के धोखे में 'शब्दभेदी' बाण चला दिया। वह बाण श्रवण कुमार को लग जाता है। मौके पर ही श्रवण कुमार की मृत्यु हो जाती है। राजा दशरथ श्रवण कुमार के माता–पिता को पानी पिलाने के लिए लोटे में पानी लेकर जाते हैं। राजा चुपचाप पानी पिलाते हैं। राजा दशरथ के इस व्यवहार से क्षुब्ध माता–पिता अपने पुत्र श्रवण कुमार को ताना मारते हैं। वे कहते हैं कि बेटा श्रवण कुमार – इससे तो हमारी खट्टी महेरी ही अच्छी थी, जिसे एक साथ बैठकर खा लिया करते

थे परन्तु आज तुम हमें जंगल में लाकर चुपचाप पानी पिला रहे हो, क्या बात है बेटा? उन्हें क्या मालूम कि उनका पुत्र मारा जा चुका है तथा पानी पिलाने वाले राजा दशरथ हैं:

''धन के पानी चले राजा दशरथ
अंधवा दीन्हे जवाब
खटा महेरी मोर बने रहय
मोला चुप तैं पानी पिलाय
अतका बचन ला सुनय राजा दशरथ
दशरथ दीन्ह जवाब
मिरगा के भोरहा म भांचा ल मारेंव .....''[8]

श्रवण के माता–पिता अपनी पुरानी बात को याद करके अपने पुत्र को ताना मारते हुए (याद दिलाते हुए) कहते हैं कि तुम्हारे चुपचाप पानी देने की अपेक्षा हमारी खट्टी महेरी ही अच्छी थी। यहां पर व्यंग्य की सुंदर प्रस्तुति है जिसे अनजाने में गाथा–गायक ने लोक शैली में अपना लिया है।

इसी प्रकार छत्तीसगढ़ी लोकगाथा 'राजा वीरसिंह', में भी व्यंग्य का सुंदर निरूपण है। राजा वीरसिंह की पत्नी रानी रमुलिया को एक जादूगर साधु मक्खी बनाकर ले जाता है। उस समय राजकुमार मदनसिंह मात्र पांच माह का था। रानी की खोज में राजा वीरसिंह निकलते हैं। साधु उन्हें भी पूरी सेना सहित पत्थर बना देता है। इधर राज महल में राजकुमार मदनसिंह और उसकी दादी माँ बच गए। मदनसिंह को इस बात की जानकारी नहीं रहती है। वह बाल स्वभाव से 'बांटी (कंचे) और भौंरा' खेलता तथा खुश रहता। एक दिन उस नगर की साठ हजार पनिहारिन अपने–अपने घड़ों को लेकर पानी भने जाती हैं। मदनसिंह की 'बांटी' धोखे से लगने से घड़ी फूट जाता है। पनिहारिन मदनसिंह को गालियां देती हैं तथा ताना मारती हैं कि वहाँ माँ मक्खी तथा बाप पत्थर बना बैठा है और यहां बेटा मौज–मस्ती कर रहा है। यह व्यंग्यात्मक बोली बाबू मदनसिंह को तीर की भांति चुभती है। वह रोते–रोते दादी मॉ के पास जाता है तथा पनिहारिन के द्वारा मारे गये ताने के बारे में पूछता है:

''एती बांटी भंवरा मदनसिंह खेले
साठ हजार पनिहारिन चांटी कस रेंगे
खेलत बांटी घइला में लगी परे
बांटी म ए दे रोगहा घइला फोरि दिये
ऐ ही बधू म बाबा तोर दाई ल लेगे
जेकर खोज म ददा तो गईस
गॉव भर के रैयत किसान ल लेके जूझे
बालक रांड हम बइठे हवन
ओतका ल सुनय बाबू मदनसिंह
रोवत–रोवत महलो घर आवे
जल्दी बात दे दाई ददा मोर कहॉ .....।''[9]

पनिहारिनों के ताने से व्यथित बाबू मदनसिंह सत्य की खोज में लग जाता है। अंत में अपने माता–पिता को प्राप्त करता है। व्यंग्य में वह गुण होता है कि वह सत्य का उजागर करता है। यहां उसी का सुंदर निरूपण है। इसी लोकगाथा के अंतर्गत बाबू मदनसिंह जब अपने माता–पिता की खोज में जाते हैं, तब रास्ते में जितनपुर की राजकुमारी जो जंगल में विचरण कर रही है, मदनसिंह को देखकर अधोलिखित पंक्तियों में ताना मारती है:

''सुनि लेते अगा ते जवइया
जैसे कागद हावय कलम मोर नइ हे

जैसे तिरिया खड़े हे मरद घलो नइ हे
ताना सुनले मदनसिंह
चलो कहां लेगहूं मैं चले जइहौं .....''[10]

राजकुमारी के ताने से मदनसिंह घायल हो जाता है। अंततोगत्वा राजकुमारी और मदनसिंह का विवाह हो जाता है।

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा 'भरथरी' में व्यंग्य का सुंदर उदाहरण विद्यमान है। राजा भरथरी की माता पवनरानी की एक भी संतान नहीं हुई। उसकी सभी सहेलियां माता बन चुकी थीं। संतान नहीं होने के कारण अन्य स्त्रियां ताना मारती हैं। वे कहती हैं कि इतने दिन आये हो गया एक भी बच्चा पैदा नहीं कर पायी। बांझ है, निःसंतान है। वह बहुत दुखी है। उसे रोज ताना जो सुनना पड़ता हैः

''गोदी सुन्ना हे राम
बालक नई हे दीदी
कहि कलपि कलपि रानी रोवे वो रानी रोवे वो
बाई ए दे जी
घाट घठौंदा अउ तरिया
संगी जवंरिहा देख तो दीदी ताना मारत हे
बंझ कइथे दीदी
बोली बोली मॉ ओ
तन छेदे दीदी
ए ही पुन्ना करेजा म लागे वो बहिनी
लगे वो बाई ऐ दे दे जी .....''[11]

व्यंग्य बाण का घाव इतना गहरा होता है कि वह मरने का नाम नहीं लेता। भरथरी की माता पवनरानी की भी यही स्थिति है। वैसे भी एक विवाहिता के लिए बांझपन अभिशाप है। इस पर भी यदि कोई ताना मार दे तो उसके सामने आत्महत्या के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाता। वर्तमान में तो विज्ञान के सामने स्थितियां बहुत बदल गईं हैं।

निष्कर्ष

व्यंग्य की स्थिति एक सुधारक की होती है जो चाहता है कि व्यंग्य से अव्यवस्था, व्यवस्था में परिवर्तित हो जाए। उसका उद्देश्य किसी का अहित नहीं होता है। इसके परिणाम सकारात्मक ही सामने आये हैं। श्रवण के माता पिता के व्यंग्य से राजा दशरथ और बाबू मदन सिंह को अपने कर्तव्य का बोध हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी हजारी प्रसाद (1959) *कबीर,* विचार प्रवाह,वाराणसी 1959, पृष्ठ 5।
2. माचवे प्रभाकर (1962) *तेल की पकौड़ियां,* भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी, पृष्ठ 5।
3. फ्रेंक सिजविक, ओल्ड बैलेड्स, अटलांटिक पब्लिशर्स, पृष्ठ 1।
4. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, सोलहवां भाग, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 73।
5. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, सोलहवां भाग, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 74।
6. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, सोलहवां भाग, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 74

7. पाठक विनय कुमार (1977) छत्तीसगढ़ी साहित्य का सांस्कृतिक अनुशीलन, प्रयास प्रकाशन, बिलासपुर, पृष्ठ 278।
8. शुक्ल दयाशंकर, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, पृष्ठ 276, 277।
9. शुक्ल दयाशंकर, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, पृष्ठ–281।
10. शुक्ल दयाशंकर, छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन, पृष्ठ–285।
11. सिन्हा विजय कुमार, छत्तीसगढ़ी लोकगाथा : एक अध्ययन, पृष्ठ–531।

––==00==––